REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

हिन्दी और उर्दू प्रिंट मीडिया में साम्प्रदायिक खबरों की प्रस्तुति का अध्ययन
(Study of the presentation of communal news in Hindi and Urdu print media)

शाहीन बानो

पी-एच.डी. जनसंचार, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

सारांश (Abstract) -

प्रस्तुत शोध पत्र में यह अध्ययन किया गया है कि हिंदी और उर्दू प्रिंट मीडिया साम्प्रदायिक खबरों को किस तरह से प्रस्तुत करता है और उन खबरों को कितना महत्व मिलता है, इन प्रमुख बिन्दुओं के अध्ययन के साथ खबरों की प्रासंगिकता का भी अवलोकन किया गया है। हिन्दी प्रिंट मीडिया की खबरों को पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि मानो खबरों का साम्प्रदायीकरण हो चुका है। हिन्दी-उर्दू प्रिंट मीडिया का आजादी की लड़ाई में गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। परंतु आज की पत्रकारिता हताशा भरी है। आज के समय की खबरों की प्रकृति एक-दूसरे सम्प्रदाय पर आरोप- प्रत्यारोप तक ही सीमित है। वर्तमान खबरों में एक ट्रेंड उभरकर सामने आया है कि सम्प्रदाय विशेष को ही निशाना बनाया जाता है। हर समाज में सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष तथा अपराध करने वाले लोग होते हैं परंतु किसी समाज विशेष के केवल नकारात्मक पक्ष और अपराध करने वाले व्यक्ति के कारण पूरे समाज को दोषी ठहराना उस समाज की छवि को धूमिल करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी और उर्दू प्रिंट मीडिया में बटी हुई साम्प्रदायिक खबरों का अध्ययन किया गया है। जिसमें हिन्दी प्रिंट मीडिया खबरों को आक्रामक ढंग से प्रस्तुत कर रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ उर्दू प्रिंट मीडिया ने खबरों को कई पक्षों के साथ प्रस्तुत किया है।

बीज शब्द (Keyword): हिंदी-उर्दू मीडिया, साम्प्रदायिकता, भारतीय समाज और धर्म.

प्रस्तावना (Introduction) -

मीडिया का कार्य सामाजिक कल्याण,सामाजिक एकता और सद्भाव का होता है। परंतु हिन्दी और उर्दू मीडिया की खबरें बटी हुयी नजर आती हैं। हिन्दी मीडिया में मुस्लिम सम्प्रदाय से संबंधित खबरों को तरजीह नहीं दी जाती है मुख्य धारा की मीडिया का भी यही हाल है। उर्दू अखबार मुस्लिम समाज के मुद्दे को उठाता है लेकिन उर्दू अखबार पर यह आरोप है कि यह सिर्फ मुस्लिम समाज की खबरों को ही तरजीह देता है। वरिष्ठ पत्रकार शाहीन नज़र अपने एक शोध आलेख में कहते हैं कि "हिन्दी अखबार पढ़ने के बाद यह भरोसा कर पाना मुश्किल है कि भारत में मुस्लिम रहते हैं अगर है भी तो वे सिनेमा जगत से जुड़े लोग हैं नहीं तो अपराधी या फिर आतंकवादी हैं। हिन्दी अखबार के एक सामान्य पाठक के लिए मुस्लिमों का दूसरे लोगों की तरह भारतीय समाज में योगदान नहीं है। उर्दू अखबार पढ़ें तो ऐसा लगता है कि किसी और भारत के बारे में पढ़ रहे हैं उर्दू अखबार में आमतौर पर जो खबरें पढ़ने को मिलती हैं वे मुस्लिम विरोधी दंगे, मुस्लिम समाज के साथ पुलिसिया ज्यादती, आतंकवाद के नाम पर सुरक्षा एजेंसियों द्वारा मुस्लिम युवाओं को उठा लेना, हिरासत में लिए गए मुस्लिम युवाओं को जमानत न देना, गैर न्यायिक हत्या, मदरसों पर पुलिस के छापे, मुस्लिम बहुल इलाकों में नागरिक सुविधाओं की कमी, वक्फ ज़मीनों को सरकारी संस्था एवं कारपोरेट घरानों द्वारा कब्जा कर लेना, मुस्लिम अल्पसंख्यक स्कूल और

कालेज सरकारी सहायता नहीं मिलने के कारण शिक्षकों और कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल पाना और मुस्लिमों को मस्जिद नहीं बनाने की अनुमति जैसी खबरें होती हैं"। खबरों की प्रस्तुति में थोड़ा अतिशयोक्ति हो सकती है लेकिन कई बार यह यथार्थ भी है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। हिंदुस्तान एक ऐसा देश है जहां अलग- अलग धर्मों के मानने वाले जमाने से एक साथ रहते आए हैं। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन और पारसी आदि हैं। आदिवासी जातियाँ भी हजारों वर्षों से इस समाज का हिस्सा रही हैं उनकी अपनी मान्यताएं हैं। लगभग 79.8 प्रतिशत वे हैं जो हिन्दू धर्म से ताल्लुक रखते हैं। लगभग 20 प्रतिशत गैर हिन्दू जिनका अन्य धर्मों से ताल्लुक है। मुसलमान 14.2 प्रतिशत है। भारत की कुल जनसंख्या लगभग एक अरब 34 करोड़ है 27 करोड़ लगभग धार्मिक अल्पसंख्यक हैं, जिसमें 19 करोड़ मुसलमान हैं। मुसलमान भारत के कई हिस्सों में रहते हैं, कश्मीर को छोड़कर लगभग सभी हिस्सों में वे अल्पसंख्यक हैं भारत में हिन्दू धर्म की आबादी के बाद मुसलमानों की आबादी द्वितीय स्थान पर है ऐसे में इतनी बड़ी जनसंख्या वाले समाज के मुद्दे को हिन्दी मीडिया सहित मुख्य धारा की मीडिया से दरकिनार कर देना कितना उचित होगा। इंडियन पॉलिसी फाउंडेशन (आईपीएफ) के निदेशक राकेश सिन्हा जो दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज के असोसिएट प्रोफेसर और राजनीतिक विद्वान भी हैं उनका मानना है कि 'उर्दू मीडिया एक खास समुदाय के विशेष एजेंडे पर काम करता है इसलिए उसके पाठक सीमित और पूर्वनिर्धारित हैं।' अंग्रेजी दैनिक अखबार द पायनियर के संपादक और भारतीय जनता पार्टी से रह चुके राज्यसभा सदस्य चन्दन मित्रा का आरोप है कि दूसरों की तुलना में उर्दू प्रेस अधिक नुकसान पहुंचा रहा है 'भारत के किसी भी भाषाई मीडिया की तुलना में मुसलमानों द्वारा संचालित प्रेस ने भारत में मुसलमानों की छवि को अधिक नुकसान पहुंचाया है। उत्तर भारत खासकर दिल्ली में, उर्दू मीडिया नकारवादी है और भारत जैसे बहुवचनात्मक समाज में मुसलमानों की सकारात्मक छवि बनाने और प्रचारित करने में उसकी दिलचस्पी नगण्य है।' मस्जिदों, दरगाहों के विध्वंस और सामाजिक–आर्थिक रूप से बदहाल होती अपनी स्थिति दंगों में समूहिक हत्या पर विरोध करना और अपने हक की आवाज बुलंद करना छोड़ दे तब शायद चन्दन मित्रा के दृष्टिकोण के अनुसार सकारात्मक छवि का निर्माण मुस्लिम समाज कर सकेगा।

शोध उद्देश्य (Research Objectives)

शोध विषय की उपयोगिता और महत्व को देखते हुए निम्नलिखत शोध उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:-

- समाचार पत्रों में साम्प्रदायिक खबरों के स्वरुप का अध्ययन।
- हिन्दी-उर्दू प्रिंट मीडिया में साम्प्रदायिक खबरों का तुलनात्मक अध्ययन।
- हिन्दी-उर्दू प्रिंट मीडिया में साम्प्रदायिक खबरों को मिलने वाली जगह का अध्ययन।
- हिन्दी-उर्दू प्रिंट मीडिया में साम्प्रदायिक खबरों की सामाजिक उपयोगिता का अध्ययन।

शोध विधि(Research Methods)

शोध की गंभीरता व गहनता प्रस्तुत करने के लिए प्राथमिक शोध प्रविधि के साथ द्वितीयक (सेकेण्ड्रीडाटा) स्त्रोत उपकरण का प्रयोग किया गया। विषय से संबंधित तथ्यों के अध्ययन के लिए कई शोध पत्रों और संबंधित साहित्य का अवलोकन किया गया है।

प्राथमिक आंकड़ों के लिए समाचार पत्रों का चयन किया गया है, जिसमें हिंदी और उर्दू प्रिंट मीडिया के रूप में दैनिक जागरण और रोजनामा राष्ट्रीय सहारा अखबार को लिया गया है। समाचार पत्रों के खबरों का चयन साम्प्रदायिकता की परिभाषा के आधार पर किया गया है। शोध अध्ययन में सैंपल के रूप में 7 जून से 13 जून 2019 एक सप्ताह की खबरों को शामिल किया गया है। खबरों के विश्लेषण के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक आंकड़ों के रूप में पहले से प्राप्त तथ्यों की प्रस्तुति एवं विश्लेषण किया गया है।

हिन्दी-उर्दू मीडिया में खबरों की प्रस्तुति का तथ्यात्मक विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में दोनों अखबारों से प्रमुख खबरों का चयन किया गया है, जिसके कई आधार निर्धारित किये गए हैं, एक सप्ताह के कुछ प्रमुख खबरों का विवरण निम्नलिखत है:-

दैनिक जागरण

पृष्ठ संख्या	शीर्षक	खबर का स्थान	खबर का विश्लेषण	खबर की प्रकृति
6	मेरठ में फरहीन से बनी अन्नू हिन्दू रीति रिवाज से की शादी	पृष्ठ के दाहिनी तरफ नीचे के कोने में	यदि इस खबर और शीर्षक को धर्म के खांचे से निकालकर मानवीय मूल्यों के आधार पर लिखा जाता तो यह एक बेहतरीन खबर हो सकती थी|	सामाजिक
7	मेरठ में अपहृत बच्ची की दुष्कर्म के बाद हत्या पंजाब में बुजुर्ग ने डेढ़ साल की बच्ची से किया दुष्कर्म टप्पल में बच्ची की हत्या के मामले में क्रिकेटर और बालीवुड हस्तियाँ आहत	पृष्ठ के बीच में	यह तीनों खबरें एक के बाद एक पृष्ठ के बीच में छपी तीनों खबरों में से दो खबरों का शीर्षक समान्य परंपरिक तरीके से दिया गया तीसरी खबर का शीर्षक भारीभरकम बना दिया जाता है|	आपराधिक
4	हिन्दुत्व के एजेंडे को फिर धार देने में जुटे उप्र के मुख्यमंत्री	दाहिने तरफ ऊपर	खबर का शीर्षक बहुत ही भड़काऊ है जबकि खबर में धार्मिक स्थल की साफ-सफाई और विकास योजना पर थी कि जिन जिलों में धार्मिक स्थान हैं में विकास योजना शुरू की गयी है| खबर को भड़काऊ नहीं बल्कि पाठक के विवेक पर छोड़ना चाहिए कि वह खबर को किस तरह से ले रहा है|	धार्मिक

रोजनामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू

पृष्ठ संख्या	शीर्षक	खबर का स्थान	खबर का विश्लेषण	खबर की प्रकृति
9	तरक्की और खुशहाली के लिए नफरत का खात्मा ज़रूरी	दाहिने तरफ नीचे के कोने में	इस खबर में एक तस्वीर का इस्तेमाल किया गया है जिसमें असली हिंदुस्तान की झलक मिलती है दो बुजुर्ग जिसमें से एक ने कुर्ता पाजामा टोपी और एक ने साधु का वस्त्र धारण किया है। एक बुजुर्ग दूसरे बुजुर्ग का हाथ पकड़ रास्ता चलने में मदद कर रहा है। यह खबर नई सरकार पर केन्द्रित हो कर लिखी गयी है। हिंसा और तनाव से मुक्त देश और नई सरकार के लिए तमाम चुनौतियों पर खरा उतरने का भरोसा इस खबर में दर्शाया गया है।	राजनीतिक
6	समाज में नफरत फैलाने वाले अनासर के खिलाफ कारवाई की जाए।	दाहिने तरफ नीचे	इस खबर में हुकूमत से अपील की गयी है कि नफरत फैलाने वाले के साथ सख्त से सख्त कारवाई की जाए। हाल ही में प्रधानमंत्री ने सबका विश्वास हासिल करने की बात की है इस खबर में यह उम्मीद जाहिर की गयी है कि सबके साथ हर क्षेत्र में बेहतर मामला किया जाएगा।	सामाजिक
6	मैं पांचों बच्चों को फौज में भेजने को तैयार		हाल ही में कश्मीर के आतंकवादी हमले में बिहार के माड़र गाँव के मोहम्मद जावेद शहीद हो गए लेकिन दैनिक जागरण अखबार में यह खबर कहीं भी देखने को नहीं मिली।	सामाजिक

निष्कर्ष(Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यात्मक विश्लेषण के लिए एक सप्ताह की खबरों को आधार बनाया गया, जिसमें खबरों को दोनों अखबारों ने अपने हिसाब से प्रस्तुत किया है। दोनों मीडिया का अध्ययन करने के बाद यह देखने को मिला कि दोनों मीडिया की खबरों की प्रस्तुति में अंतर है और खबरें भी बटी हुई हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से तथ्य के रूप में साम्प्रदायिक खबरों का जो स्वरूप देखने को मिला उसमें सामाजिक,रानीतिक, धार्मिक और आपराधिक खबरें शामिल हैं। दैनिक जागरण देश में सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार है इसलिए खबरों में संतुलन बनाना होगा। रोजनामा राष्ट्रीय सहारा में मुस्लिम मसलों से जुड़ी खबरें मिली। किसी समुदाय या धर्म विशेष को निशाना बनाने वाली खबरें नहीं मिली। एक सप्ताह की खबर में रोजनामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू अखबार की एक खबर ऐसी मिली जिसे धर्म के साथ जोड़ा गया था जिसका शीर्षक- 'झारखंडी बहारी कालोनी की मस्जिद में फज्र की अजान पर पाबंदी' इस खबर के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट का हुक्म है कि रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक किसी भी तरह का लाउडस्पीकर बजाना मना है। शादी समारोह, जुलूस या फिर धार्मिक जगह मंदिर या मस्जिद तमाम जगहों पर लाउडस्पीकर इस्तेमाल पर पाबंदी है इस शीर्षक को धार्मिक रंग दिया गया है जो कि खबर को संतुलित नहीं करती है। दैनिक जागरण अखबार खबर का शीर्षक 'मेरठ में फरहीन से बनी अन्नू हिन्दू रीति रिवाज से की शादी' इस खबर की सामाजिक उपयोगिता बढ़ जाती यदि इस खबर का शीर्षक धर्म से नहीं जोड़ा जाता बल्कि सामाजिक एकता या मानवीय मूल्यों से प्रेरित हो कर इस शीर्षक को लिखा जाता। प्रस्तुत शोध पत्र में दैनिक जागरण और रोजनामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू की खबरों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है जिसे आप देख कर अंदाजा लगा सकते हैं कि दोनों मीडिया की खबरों की प्रस्तुति किस तरह है। दैनिक जागरण की खबर का शीर्षक एक ही मुद्दे पर 11जून 2019 'कठुआ कांड तीन दरिंदों को मौत तक जेल, तीन को पाँच साल कैद' 20 अप्रैल 2018 'कठुआ में बच्ची से नहीं हुआ था दुष्कर्म' 20 अप्रैल के शीर्षक को लगभग दैनिक जागरण के सभी संस्करणों के पहले पन्ने पर प्रकाशित किया गया था। इस तरह के शीर्षक समाज को बाटने का कार्य करते हैं समाज की भावनाओं को ध्यान में रखकर खबरें नहीं लिखी जानी चाहिए बल्कि निष्पक्षता को तरजीह देना चाहिए। रोजनामा राष्ट्रीय सहारा के पहले पृष्ठ पर ज्यादातर खबरें यूनानी दवाओं के विज्ञापन से संबंधित मिलीं। पाठकों की राय और खबरों के बारे में आम जन की राय भी यही है कि दैनिक जागरण ने खबरों के प्रकृति को आक्रामक ढंग से बनाया है जिसमें प्रस्तुति के स्वरुप में महत्वपूर्ण अंतर देखा गया।

सन्दर्भ-

1. राय, बिभूतिनारायण.(2000). साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस. न्यू दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
2. Werbner, P. (2010), Religious identity, The Sage handbook of identities, ISBN 978-1412934114, Chapter 12.
3. Bristow, R.C.B. (1974). Memories of the British Raj: A Soldier in India, Johnson, ISBN 978-0853071327
4. Horowitz, D.L. (2000) *The Deadly Ethnic Riot*. University of California Press, Berkeley and Los Angeles, CA
5. Arafaat A. Valiani, Militant Publics in India: Physical Culture and Violence in the Making of a Modern Polity, ISBN 978-0230112575, Palgrave Macmillan, pp 29–32
6. David Nirenberg. (1998). Communities of Violence: Persecution of Minorities in the Middle Ages, Princeton University Press.
7. Panday, G. (1990), The Construction of Communalism in Colonial North India, Oxford University Press, ISBN 978-0198077305
8. पुनियानी, राम.(2005).साम्प्रदायिक राजनीति: तथ्य एवं मिथक.नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
9. चमडिया, अनिल.(2014).मीडिया और मुसलमान.दिल्ली: मीडिया स्टडीज ग्रुप.
10. चमडिया, अनिल.(2014).मीडिया की साम्प्रदायिकता .दिल्ली: मीडिया स्टडीज ग्रुप.

11. Michael Jerryson, Mark Juergensmeyer, and Margo Kitts.(2013).The Oxford Handbook of Religion and Violence(Edited).Londan:Oxford University Press.

शाहीन बानो
पीएच.डी. जनसंचार, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.